p19 Aufgabe2 zum 07.01.2022

Bitte übersetzt in der rechten Spalte der gegebenen Reihe nach.

Anfang p19

|  |  |
| --- | --- |
| ταῦτα εἴρηται πάντα |  |
| τῆς συμβουλῆς ἕνεκα |  |
| τῶν Διωνείων φίλων καὶ συγγενῶν· |  |
| συμβουλεύω δὲ δή τι πρὸς τούτοις |  |
| τὴν αὐτὴν συμβουλὴν |  |
| καὶ λόγον τὸν αὐτὸν λέγων |  |
| ἤδη τρίτον τρίτοις ὑμῖν. |  |
| μὴ δουλοῦσθαι Σικελίαν |  |
| ὑπ᾽ ἀνθρώποις δεσπόταις, |  |
| μηδὲ ἄλλην πόλιν, |  |
| ὅ γ᾽ ἐμὸς λόγος, |  |
| ἀλλ᾽ ὑπὸ νόμοις· |  |
| οὔτε γὰρ τοῖς δουλουμένοις |  |
| οὔτε τοῖς δουλωθεῖσιν ἄμεινον, |  |
| [334δ] αὐτοῖς καὶ παισὶ |  |
| παίδων τε καὶ ἐκγόνοις, |  |
| ἀλλ᾽ ὀλέθριος πάντως ἡ πεῖρα, |  |
| σμικρὰ δὲ καὶ ἀνελεύθερα ψυχῶν ἤθη |  |
| τὰ τοιαῦτα ἁρπάζειν κέρδη φιλεῖ, |  |
| οὐδὲν τῶν εἰς τὸν ἔπειτα |  |
| καὶ εἰς τὸν παρόντα καιρὸν |  |
| ἀγαθῶν καὶ δικαίων εἰδότα |  |
| θείων τε καὶ ἀνθρωπίνων. |  |
| ταῦτα πρῶτον μὲν Δίωνα |  |
| ἐπεχείρησα ἐγὼ πείθειν, |  |
| δεύτερον δὲ Διονύσιον, |  |
| τρίτους δὲ ὑμᾶς νῦν. |  |
| καὶ ἐμοὶ πείθεσθε |  |
| Διὸς τρίτου σωτῆρος χάριν[[1]](#endnote-1), |  |
| εἶτα εἰς Διονύσιον βλέψαντες καὶ Δίωνα, |  |
| ὧν ὁ μὲν μὴ πειθόμενος |  |
| ζῇ τὰ νῦν [334ε] οὐ καλῶς, |  |
| ὁ δὲ πειθόμενος τέθνηκεν καλῶς· |  |
| τὸ γὰρ τῶν καλλίστων ἐφιέμενον[[2]](#endnote-2) |  |
| αὑτῷ τε καὶ πόλει[[3]](#endnote-3) πάσχειν |  |
| ὅτι ἂν πάσχῃ πᾶν ὀρθὸν καὶ καλόν. |  |
| οὔτε γὰρ πέφυκεν |  |
| ἀθάνατος ἡμῶν οὐδείς, |  |
| οὔτ᾽ εἴ τῳ συμβαίη, |  |
| γένοιτο ἂν εὐδαίμων, |  |
| ὡς δοκεῖ τοῖς πολλοῖς· |  |
| κακὸν γὰρ καὶ ἀγαθὸν οὐδὲν |  |
| λόγου ἄξιόν [335α] ἐστιν τοῖς ἀψύχοις, |  |
| ἀλλ᾽ ἢ μετὰ σώματος οὔσῃ ψυχῇ |  |
| τοῦτο συμβήσεται ἑκάστῃ |  |
| ἢ κεχωρισμένῃ. |  |
| πείθεσθαι δὲ ὄντως ἀεὶ χρὴ |  |
| τοῖς παλαιοῖς τε καὶ ἱεροῖς λόγοις, |  |
| οἳ δὴ μηνύουσιν ἡμῖν |  |
| ἀθάνατον ψυχὴν εἶναι |  |
| δικαστάς τε ἴσχειν |  |
| καὶ τίνειν τὰς μεγίστας τιμωρίας, |  |
| ὅταν τις ἀπαλλαχθῇ τοῦ σώματος· |  |
| διὸ καὶ τὰ μεγάλα ἁμαρτήματα καὶ ἀδικήματα[[4]](#endnote-4) |  |
| σμικρότερον εἶναι χρὴ νομίζειν κακὸν |  |
| πάσχειν ἢ δρᾶσαι, |  |
| ὧν ὁ φιλοχρήματος [335β] |  |
| πένης τε ἀνὴρ τὴν ψυχὴν[[5]](#endnote-5) |  |
| οὔτε ἀκούει, ἐάν τε ἀκούσῃ, |  |
| καταγελῶν, ὡς οἴεται, |  |
| πανταχόθεν ἀναιδῶς ἁρπάζει πᾶν |  |
| ὅτιπερ ἂν οἴηται, |  |
| καθάπερ θηρίον, φαγεῖν ἢ πιεῖν |  |
| ἢ περὶ τὴν ἀνδραποδώδη καὶ ἀχάριστον, |  |
| ἀφροδίσιον λεγομένην οὐκ ὀρθῶς, |  |
| ἡδονὴν ποριεῖν αὑτῷ τοὐμπίμπλασθαι, |  |
| τυφλὸς ὢν καὶ οὐχ ὁρῶν, |  |
| οἷς συνέπεται τῶν ἁρπαγμάτων ἀνοσιουργία, |  |
| κακὸν ἡλίκον ἀεὶ |  |
| μετ᾽ ἀδικήματος ἑκάστου, |  |
| ἣν ἀναγκαῖον[[6]](#endnote-6) τῷ ἀδικήσαντι συνεφέλκειν |  |
| ἐπί τε γῇ στρεφομένῳ |  |
| καὶ ὑπὸ γῆς [335ξ] νοστήσαντι[[7]](#endnote-7) πορείαν |  |
| ἄτιμόν τε καὶ ἀθλίαν πάντως πανταχῇ. |  |

1. Διὸς τρίτου σωτῆρος χάριν Wortspiel mit der Redewendung τὸ τρίτον <χεῦμα> τῷ σωτῆρι "den dritten <Opferguss> dem Retter <Zeus>", also "dem Retter Zeus als dem dritten (mit dem dritten Opferguss) zuliebe [↑](#endnote-ref-1)
2. ἐφιέμενον ist Subjektsakkusativ zum substantivierten Infinitiv πάσχειν [↑](#endnote-ref-2)
3. Die Dative sind Ergänzungen zu τῶν καλλίστων [↑](#endnote-ref-3)
4. Akk.Objekte zu πάσχειν ἢ δρᾶσαι [↑](#endnote-ref-4)
5. τὴν ψυχήν adverbialer Akkusativ zu πένης [↑](#endnote-ref-5)
6. ἀναγκαῖον erg. ἐστίν [↑](#endnote-ref-6)
7. νοστήσαντι πορείαν ἄτιμον im Phaidon beschreibt ein Mythos die ständigen Versuche der Seele des Ungerechten, Verzeihung zu bekommen. [↑](#endnote-ref-7)